

③ विसर्ग संधि - '० + स्वर / व्यंजन'

यदि किसी विसर्ग के बाद स्वर / व्यंजन आ जाए तो विसर्ग के उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं-

जैसे - मनः + हर - मनोहर, आशीः + वाद - आशीर्वाद
 औ पयः + इच्छा - पयश्छा, र

विसर्ग संधि को तीन भागों में बाँटा जा सकता है -

- ① → उत्त्व विसर्ग
- ② → रुत्व विसर्ग
- ③ → सत्व विसर्ग

① उत्त्व विसर्ग संधि- [अ/आः+घोषवर्ण]

↓
औ

यदि विसर्ग से पहले 'अ/आ' हो और विसर्ग के बाद कोई घोषवर्ण आ जाए तो विसर्ग (ः) का 'औ' हो जाएगा।

जैसे- मनः+विकार-मनोविकार, मनः+व्यथा-मनोव्यथा

↓
औ

↓
औ

मनः + अभिषाष - मनोऽभिषाष / मनोभिषाषा

ओ यशः + अभिषाष - यशोऽभिषाष / यशोभिषाषा

ओ मनः + रथ - मनोरथ,

नपः + वन - तपोवन ओ मनः + विज्ञान - मनोविज्ञान

ओ नपः + भूमि - तपोभूमि, ओ सरः + वर - सरोवर

② रुत्व विसर्ग संधि- [अ/आ को छोड़कर अन्य स्वरः + घोषवर्ण]

यदि विसर्ग से पहले 'अ/आ' को छोड़कर अन्य स्वर हो,
और उसके बाद कोई घोषवर्ण आ जाए तो विसर्ग का 'र' हो जाता है-

जैसे- आयुः + विज्ञान - आयुर्विज्ञान, आयुः + वेद - आयुर्वेद

आविः+भाव-आविर्भाव, आशीः+वचन-आशीर्वचन
प्रादुः+भाव-प्रादुर्भाव, धनुः+वेद-धनुर्वेद
धनुः+धारी-धनुर्धारी, आशीः+वाद-आशीर्वद

③ सत्व विसर्ग संधि:- (i) [अ/आः + क/प]
 ः ज्यों का त्यों

यदि विसर्ग से पहले 'अ/आ' हो और विसर्ग के बाद 'क/प' वर्ण आ जाए तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होगा अर्थात् विसर्ग 'ज्यों का त्यों' रहता है-

जैसे- मनः + कामना - मनःकामना, यशः + कामना - यशःकामना

अन्तः+पुर - अन्तःपुर, रजः+कण - रजःकण,

तपः+पूत - तपःपूत, पयः+पान - पयःपान

अपवाद - 1 पर, 2 कर, 2 कृत, 4 पाति और 4 कार,
इन पर होती है, अपवाद की मार।

1 पर →	परः + पर - परस्पर	4 पति →	भाः + पति - भास्पति
2 कर →	भाः + कर - भास्कर		वाचः + पति - वाचस्पति
	श्रेयः + कर - श्रेयस्कर		बृहः + पति - बृहस्पति
			वनः + पति - वनस्पति
2 कृत →	पुरः + कृत - पुरस्कृत	4 कार →	जमः + कार - जमस्कार
	तिरः + कृत - तिरस्कृत		पुरः + कार - पुरस्कार
			तिरः + कार - तिरस्कार
			सरः + कार - सरोकार